Hindi

Q.No.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	TOTAL
MARKS obtained	10	5	3	3	2	3	2	3	1	3	3	3½	7½	12	4	4½	5	5								78½
Q.No.	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	
MARKS obtained																										

Q. NO.	खण्ड - क	Marks Obtained
उ०1	(क) मनुष्य को जीवन संसार के छोटे-बड़े प्राणियों और पदार्थों में श्रेष्ठ माना गया है। वह इसलिए क्योंकि मनुष्य बड़ा बुद्धिमान और कल्पनाशील प्राणी है। अपने विचारों के बल पर ही वह जो चाहे कर सकता है और बहुत ऊँचा उठ सकता है।	
	(ख) उन्नति करने के लिए मनुष्य के विचार सच्चे, सादे और पवित्र होने चाहिए। साथ-ही-साथ उसके विचार मनुष्य के व्यावहारिक जीवन में संबंध रखने वाले	

होने चाहिए।

(ग) वास्तविक सादगी मनुष्य के पहनावे से नहीं, बल्कि उसके प्रत्येक हाव-भाव, विचार तथा जीवन के ढंग से पता चलती है। सादे हाव-भाव, अच्छे विचार तथा सामान्य जीवन का ढंग ही वास्तविक सादगी है, जो विचारों को उच्च बनाकर सब प्रकार की उन्नति और विकास का कारण बन पाते हैं। 'सादा जीवन, उच्च विचार' को अपनाना ही वास्तविक सादगी है।

(घ) महापुरुषों के जीवन के उदाहरण गद्यांश में दिए गए। महापुरुष ही सादगी पसंद क्योंकि होता है। वह महापुरुष जनता को उच्च विचार देकर उन्नति करता है। महापुरुष ही अपने विकास की राह को प्रशस्त करता है। महात्मा बुद्ध, संत कबीर, गुरु नानक, महात्मा गाँधी, विनोबा भावे आदि उदाहरण देकर लेखक ने इस तथ्य के प्रत्यक्ष प्रमाण दिए हैं। महापुरुषों को सादगी पूर्ण जीवन बताने के लिए तथा उनसे प्रेरित करने के लिए लेखक ने उदाहरण दिए हैं।

10

(ङ) मूलशब्द प्रत्यय
सफल + ता (सफलता)

(च) 'सादा जीवन, उच्च विचार' तथा 'वास्तविक सादगी' इस गद्यांश के उपयुक्त शीर्षक हैं।

उ02 (क) काव्यांश के अन्दर सूर्योदय के प्राकृतिक दृश्य का वर्णन किया गया है।

(ख) कवि रात के राजा अर्थात् चंद्र को राह में भिखारी तन खड़ा देखकर ठिठकता है।

(ग) 'रात का राजा' कह कर चाँद को संबोधित किया गया है। (5)

(घ) रवि के आने से तारकों (तारों) की फौज मैदान छोड़ कर भागी क्योंकि रवि की सवारी आने वाली थी तथा सूर्य के प्रकाश में तारे अदृश्य हो जाते हैं।

(ङ) रवि का पथ कलियों और कुसुमों से सजा हुआ तथा रवि के आते ही उसके पथ से सब हट जाते हैं। यही रवि के पथ की विशेषता है।

खंड - 'ख'

	समस्तपद	विग्रह	समास का नाम
उ03 (क) (i)	प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला	तत्पुरुष समास
(ii)	नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव	बहुव्रीहि समास

(2)

		समस्त पद	समास का नाम
303 (ख)	पाँच तंत्रों का समाहार	पंचतंत्र	द्विगु समास (1)

	शब्द	पूर्वपद	उत्तरपद	
304 (क) (i)	सर्वाधिक =	सर्व	+ अधिक	(2)
(ii)	राजर्षि =	राजा	+ ऋषि	

	पूर्वपद	उत्तरपद	शब्द	
(ख) (i)	सत्	+ वाणी	= सद्वाणी	(1)

305 (क) रात - निशा, रात्रि, रजनी (1)

(ख) तरल - ठोस (1/2)

(ग) जिसकी गहराई का पता न मिल सके - अथाह (1/2)

306 (क) (i) मुझे गीतों की एक पुस्तक चाहिए (1)

(ख) (i) 'तुलसीदास' जी ने 'रामचरितमानस' लिखी थी। (1)

(ii) मैंने आदरपूर्वक पूछा, "देवी, क्या आज्ञा है?" (1)

उ07 (क) माताजी मुंबई से कल ही आई हैं। ½

(ख) गुलाब का फूल सुंदर होता है। ½

विशेषण भेद - गुणवाचक विशेषण] 1

(ग) कवि - कवित्व ½

उ08 (क) (i) बच्चे खीर खाकर सो गए। 2

(ii) अँधेरी रात थी और चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था।

(ख) वाक्य भेद - 'शर्तबोधक' अथवा 'संकेतवाचक' वाक्य 1

उ09 परस्पर विरोधी दलों का सहारा लेना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है। 1

उ010 (क) उपर्युक्त पंक्ति में अनुप्रास अलंकार प्रयोग हुआ है। 1

~~(ख)~~ मधुर-मधुर, मुस्कान, मनोहर शब्दों में 'म' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

2

उ०10 (ख) उपमा अलंकार

जहाँ किसी व्यक्ति, वस्तु की तुलना किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु से किसी समानता के आधार पर की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण - (i) समय शिला-सा जम जाएगा। (यहाँ पर समय की जमी हुई शिला से तुलना की गई है)

(ii) देखो अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे हैं (यहाँ शिशुओं की तुलना कमल से सुंदरता के आधार पर की गई है)

~~उत्प्रेक्षा अलंकार~~

~~जहाँ किसी रूप, गुण आदि की समानता के कारण उपमेय में उपमान की सम्भावना या कल्पना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा अलंकार में मनु, मानो, जनु, जनहु, ज्यों आदि शब्दों का प्रयोग होता है।~~

खंड - 'ग'

उ०11 (क) माताएँ श्रीराम के कमल के समान मुख, कोंपल जैसे लाल और कोमल होठ तथा उनके मुँह से मधुर, मीठे शब्द सुनकर, ठुमक-ठुमक कर चलने वाले रूप को देखकर तथा सुनने वाले रूप को देखकर प्रसन्न होती हैं।

(ख) जब श्रीराम चलने के प्रयास में गिर जाते हैं, तब वे भूमि पर गिरकर अपने शरीर को मिट्टी से लिपटा लेते हैं। उनके शरीर पर लगी इस मिट्टी को अपनी साड़ी के आँचल से साफ़ करने तथा अपना वात्सल्य प्रकट करने के लिए माताएँ श्रीराम को गोद में उठा लेती हैं।

उ०॥ (ग) श्रीराम के मधुर वचनों पर माताएँ अपना तन, मन और धन न्योछावर करने को तैयार है। माताएँ श्रीराम के प्रति अपने आप को पूर्ण तरह से समर्पित करने के लिए तैयार है। (3)

उ०१२(क) बच्चों ने भैंस का दूध निकालने के लिए झूले की रस्सी उतार ली और उससे भैंस के पैर बाँध दिए। पिछले दो पैरों को चाचाजी की चारपाई के पायों से बाँध दिए और दूध निकालने के लिए बाकी दो पैर बाँध ही रहे थे कि भैंस चौकन्नी हो गई। (2)

(ख) चाचाजी को वास्तविकता का पता तब चला जब चारपाई पानी के ड्रम से टकराई और पानी छलक कर उनके ऊपर गिरा। (2½)

(ग) चाचाजी ने अपनी इस दशा के लिए अब्बा मियाँ तथा उनसब को दोषी ठहराया जिन्होंने बच्चों को सांड की तरह छोड़ दिया क्योंकि उन्हें ऐसा लगा कि वे किसी आँधी-तूफान में फँसे हैं और घर की दशा देख कर उन्हें गुस्सा आ गया। बच्चे सांड की तरह सब नष्ट कर दिया था।

उ0 1

उ0 3 | (क) राजेश्वरी ने जीवनलाल को यह सीख दी कि वह जैसा व्यवहार दूसरों से अपनी बेटी के लिए चाहता है, वैसा ही व्यवहार वह दूसरों की बेटी को भी दे। राजेश्वरी ने यह भी समझाया कि जब तक वह जीवनलाल बेटी व बहू को समान दृष्टि से नहीं देखेगा तब तक न तो चैन मिलेगा और न ही सुख-शान्ति।

7½

(ख) बोलने की प्रबल इच्छाशक्ति हेलेन को बार-बार उद्वेलित कर देती। वे तरह-तरह की आवाज़ें निकालती और ऐसा करते समय एक हाथ गले पर दूसरा हाथ होंठों पर रखती और उनमें आ रहे परिवर्तनों को महसूस करने का प्रयास करती परन्तु कई बार प्रयास करने पर भी वे असफल रहती जिससे हेलेन को तनाव व गुस्सा बढ़ जाता।

(ग) सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ जैसा सोना का लघु शरीर था। उसका मुँह छोटा-सा था और बड़ी-बड़ी गोल पानीदार आँखें थीं जिन्हें देखने पर लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। यही सोना की शैशवावस्था का रूप था।

(घ) श्रीधर लेखक की माँ की प्यारी सखी, रीता का बेटा था। श्रीधर अपनी माँ के साथ लेखक की बहन के विवाह-समारोह में सम्मिलित होने के लिए आया था।

से साफ़ ...
माताएँ श्रीराम को गोद में ...

उ०12 (क) कल्पना की अमेरिका जाने पर पहली भेंट एक लंबे कद के अमेरिकी व्यक्ति जीन पियरे हैरिसन से हुई। कल्पना ने हैरिसन के आवास के निकट ही अपना निवास बना (लिया) धीरे-धीरे यह भेंट मित्रता में बदल गई और कल्पना व हैरिस के आपसी संबंध प्रगाढ़ होते गए। सन 1983 में कल्पना एक सामान्य विवाह समारोह में हैरिसन से विवाह के बंधन में बंध गई जो कि कल्पना का एक साहसिक कदम था क्योंकि उन्होंने समाज के विरुद्ध जाकर विदेशी व्यक्ति से, बिना किसी सामाजिक तथा पारिवारिक सहयोग के विवाह कर लिया था इस कार्य से उन्होंने समाज की रुढ़ियों को भी तोड़ा।

(ग) दोपहरी कविता में कवि श्वान व घोड़े के माध्यम से समाज में अमीर-गरीब में भेदभाव की स्थिति को चित्रित करना चाहा है। एक घोड़ा गरीब कोचवान की काली सी चाबुक से बचने के लिए अपने पाँव आगे बढ़ाए जाता है। उस घोड़े को अत्यंत कष्ट भोगने पड़ते हैं। वहीं दूसरी ओर एक अमीर घर का श्वान बाथरूम के ठंडे पानी की ठंडक का आनंद उठाता है। कवि ने समाज में लाचारी से भरे जीवन तथा सुख-सुविधा से भरे जीवन की ओर भी इशारा किया है।

(घ) हेलेन केलर का जीवन बहुत कष्टमय था पर उन्होंने सारे कष्टों का समाधान पाया। हेलेन केलर के जीवन से हमें दृढ़ संकल्पता, निरंतर प्रयास, सच्ची लगन व निष्ठा जैसे गुणों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है। हमें उनके जीवन से यह भी सीखने को मिलता है कि यदि ज़िंदगी का एक दरवाज़ा बन्द होता है तो दूसरा दरवाज़ा

30

अवश्य ही खुला होता है। उनका जीवन हमें यह भी प्रेरणा देता है कि यदि निर्धारित लक्ष्य की ओर अथक प्रयास व कठिन परिश्रम किया जाए तो जीवन में लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी। हेलन केलर के जीवन से हमें यह भी प्रेरणा लेनी चाहिए कि यदि हमारे अन्दर सकारात्मकता हो और नकारात्मकता का अस्तित्व समाप्त हो जाए, तो हम अपनी सीमाओं को अवसरों में बदल सकते हैं और जीवन में पूर्णता व संतुष्टता अनुभव कर सकते हैं।

(ङ.) ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष नहीं है प्रत्युत इससे मनुष्य के आनंद में बाधा भी पड़ती है। जिस भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या होती है वह जीवन का आनंद नहीं उठा पाता है क्योंकि दूसरों की प्राप्त वैभव से जलता है। ऐसे व्यक्ति को सूर्य मद्धिम सा दीखने लगता है, पक्षियों की आवाज में जादू ही नहीं रह जाता है और फूल तो ऐसे लगते हैं जैसे वे खिलने योग्य ही न हों। चिंता-दग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र होता है। ईर्ष्यालु व्यक्ति अपनी तुलना दूसरों से करता है और उसके पक्ष के सारे अभाव उसके हृदय पर दंश मारते हैं जिससे मनुष्य के सुख-चैन तथा आनंद समाप्त हो जाता है।

(12)

से ... को गोद में ...
माताएँ श्रीराम को गोद में

3(ब) बातचीत की कला ~~[illegible]~~ मनुष्य के चरित्र निर्माण में सहयोगी होती है। यह पंक्ति एकदम सत्य है। चरित्र निर्माण में माता-पिता, गुरुजन, संगति एवं वातावरण का प्रभाव पड़ता है। बातचीत की कला में निपुण व्यक्ति समाज में अपनी एक अलग-सी छाप छोड़ता है और समाज में प्रतिष्ठित स्थान बना पाता है। इस प्रकार व्यक्ति की सुदृढ़ छवि का निर्माण भी हो पाता है। सुदृढ़ छवि होने पर व्यक्ति ~~मे~~ समाज में व्याप्त हिंसा, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, कलह, खींचातानी आदि, सामाजिक प्रवृत्तियों का शिकार होने से बच जाता है और समाज में प्रतिष्ठित ~~से~~ स्थान को ग्रहण कर पाता है। व्यक्ति के विचारों, प्रत्येक हाव-भाव तथा जीवन के ढंग से ~~उसकी~~ उसके चारित्रिक गुणों का पता चलता है। यदि उसके विचार तथा बात करने का तरीका अच्छा होता है, तो सुदृढ़ चरित्र का निर्माण हो पाता है। उदाहरण के लिए जो व्यक्ति अशिक्षित होते हुए बातचीत की योग्यता तथा व्यवहार कुशलता प्राप्त कर पाते हैं, उस व्यक्ति का चरित्र निर्मल होता है और दूसरी ओर सुशिक्षित व्यक्ति भी बातचीत की कला में निपुण होने पर अशिक्षित ही लगता है। बातचीत को अधरों से छाई निश्छल स्वाभाविक मुस्कान सबको आकृष्ट करती है। सरल हृदय से प्रस्फुटित यह मुस्कान मनुष्य के चरित्र की निर्मलता का प्रतीक भी होती है। इसलिए बातचीत की कला का चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण कार्य होता है।

(4)

खंड - 'घ'

3016 (क) हमारा जीवन और समाचार पत्र

30' समाचार पत्र हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है और हमेशा रहेगा। समाचार पत्र में देश - विदेश, खेल, वित्त तथा राज्य में हो रही सभी गतिविधियों के बारे में बताया जाता है। समाचार पत्र से हम सभी की जिज्ञासा शान्त होती है। समाचार पत्रों को लोकतंत्र का रक्षक भी कहा जाता है क्योंकि यह समाचार पत्र में छपी खबरें पक्षपात से रहित होती हैं। समाचार पत्र का स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भाग था। अलग - अलग भाषाओं में छपे समाचार पत्र अन्धविश्वासों के खिलाफ सच्चाई फैलाते थे, अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर हो रहे अत्याचार के बारे में जानकारी देते थे जिन्हें पढ़कर देश का युवा प्रेरित हो उठता था। समाचार पत्र के अनेक फायदे होते हैं। इससे हमारे शब्दकोष में वृद्धि होती है और हम उन्नति करते हैं। समाचार पत्र पढ़ने से हम जागरूक नागरिक भी बन पाते हैं तथा लोग अपने अधिकारों को जान पाते हैं। समाचार पत्र कोई भी तरह की लाभ योजनाएँ तथा अन्य जानकारी राष्ट्रीय स्तर पर एकसाथ फैलाने के लिए अति उपयोगी होती हैं। सन्यास ले चुके बुजुर्ग समाचार पत्र पढ़कर अपना समय निकालते हैं तथा बुजुर्गों को हर घटना से परिचित करते हैं। अतः समाचार पत्रों की हमारे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है और हर बच्चे, आदमी, औरत तथा बुजुर्गों को इसे पढ़ना चाहिए।

इतिहास के पन्ने पलट कर देखें तो

4½

माताएँ श्रीराम को गोद

Que. No./
Marks Scored

खंड - घ

17) सेवा में,

बिजली अधिकारी
दिल्ली विद्युत बोर्ड
इंद्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली

विषय - बिजली संकट का प्रभाव

5

महोदय

मैं विश्वास नगर का निवासी हूँ और मैं आपका ध्यान हमारे मोहल्ले की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। प्रायः हमारे मोहल्ले में बिजली गुल रहती है। गरमी के दिनों में दोपहर का समय बिना बिजली के गुजारना बहुत कठिन है। शाम के समय जब यहाँ के बाजारों में लाखों का लेन-देन हो रहा होता है, तब एका-एक बिजली चली जाती है। इस प्रकार अचानक बिजली चले जाने से चोरी-डाके तथा सड़क हादसों की आशंका बढ़ जाती है। परीक्षा के दिनों में बच्चे पर्याप्त तैयारी भी नहीं कर पा रहे हैं। बिजली चले जाने के कारण यहाँ पानी भी नहीं आता। अतः बिजली कटौती के कारण यहाँ के लोगों का सारा जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है।

अतः आशा है कि आप यहाँ के लोगों की परेशानी को समझेंगे और बिजली कटौती के समय परिवर्तन लाएँगे तथा इसकी अवधि भी कम करेंगे।

धन्यवाद।

Page Total 5

भवदीय
अमित
ए-104, निर्माण अपार्टमेंट, ~~विश्वास नगर~~
विश्वास नगर, दिल्ली

दिनांक - 27/2/19

3018

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, ~~[illegible]~~ दिल्ली
सूचना

27 फरवरी, 2019

अंतर्सदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

सभी छात्रों को यह सूचित किया जाता है कि विद्यालय में अंतर्सदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता 11 मार्च, 2019 को ~~10:00 बजे से 1:00~~ सुबह के दस ~~(10:00)~~ बजे से दोपहर के ~~बजे~~ एक बजे तक (10:00-1:00) स्कूल के ऑडिटोरियम में होगी। कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के छात्र इसमें भाग ले सकते हैं। सर्वश्रेष्ठ वाद-विवाद करने वाले को पुरस्कार भी दिया जाएगा। आप सभी आमंत्रित हैं।

इच्छुक छात्र अपना नाम अपने अध्यापक को 8 मार्च, 2019 तक दे सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए संपर्क करें—

नमन
(सांस्कृतिक सचिव)

5

मातार [illegible]